

मेरे मृत्यु के बाद मेरे जारि बहिन बेटीश
व अन्य सम्बन्धीरो का कार्य एक नही रहेगा।

मह वसीयतनामा मे - पूर्ण उतरस्य दिनाङ्क के
संग्रह बनाया है तथा किसी के जी वखान मे
आकर नही किया है। मेरी इच्छातुमार ही
वसीयतनामा किया है।

मेरी मृत्यु के बाद ही वसीयतनामा लागू
होगा तथा मुझे इसको कपी जी केर बदक
करने का सम्पूर्ण एक है।

मेने यह वसीयतनामा पर ~~पुस्तक~~ ~~लिखे~~ लिखे गजको
के अन्त किछ है।



श्रीमती नजुदेवी जीकेश्वर
हस्ताक्षर हमारे समक्ष किए

1: ~~Rad~~ (JAYANTICAL BAFVA)

2. Ram (JINSH. S. SINGH)

दिनांक 2 अग्रेल 2004

8002	3
910	

TRUE COPY
Registrant(03) / Najudevi Jain



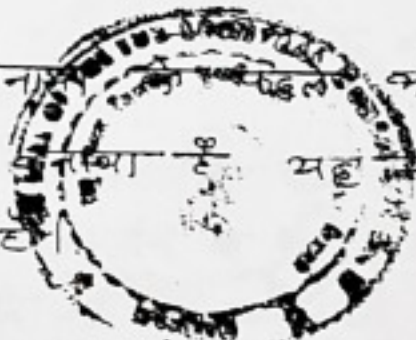
वसीयतनामा

02-04-2004

मैं नाजुदेवी जैन w/o श्री चारखलजी जैन इम्र
६२ वर्ष स्वस्थ दिमाग से मेरी चल अचल
सम्पति का वसीयतनामा करती हूँ।

मेरा स्वास्थ्य बराबर नहीं होने की वजह
से मेरी सम्पति का वसीयतनामा करती हूँ
मुझे करीब पाँच साल वर्ष से मधुमेह शोका-रोग
पिपीत व शरीर हूँ तथा खाई-पर निभवि
रहता पड़ा हूँ।

मैंने इस वसीयतनामा को कोई
वसीयतनामा नहीं करवाया है। यह मेरा
अंतिम वसीयतनामा है।



मैं मेरा वसीयतनामा को लागू करने
के लिए निम्नलिखित लोगों को नियुक्त
करती हूँ।

1. विवीप जैन (पुत्र)
2. गुमानलजी धोकर

3004 93

✓